संदेश

गांधीजी की 153वीं जयंती के अवसर पर मैं, सभी देशवासियों की ओर से राष्ट्रपिता महात्मा मांधी को श्रद्धा-सुमन अर्पित करती हूं।

गांधी जयंती, हम सभी के लिए शांति, समता और सांप्रदायिक सद्भाव के गांधीजी के प्रेरक जीवन मूल्यों के प्रति स्वयं को फिर से समर्पित करने का अवसर है। इस वर्ष गांधी जयंती का आयोजन, एक विशेष महत्व रखता है क्योंकि राष्ट्र, स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अमृत महोत्सव मना रहा है। यह अवसर, हम सभी के लिए गांधीजी के सपनों के भारत को साकार करने की दिशा में काम करने का है।

एक शताब्दी पहले, गांधीजी ने स्वदेशी का आह्वान करके और आत्मनिर्भरता पर बल देकर, करोड़ों लोगों को प्रेरित किया था। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के हमारे वर्तमान प्रयास, महात्मा गांधी की उसी सोच से प्रेरित हैं। ये प्रयास, उनके प्रति देश के लोगों की सच्ची श्रद्धांजलि हैं। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत ही उनके सपनों का भारत है और इस संबंध में किए गए प्रयासों के परिणाम अब दिखाई देने लगे हैं।

अब, जब हम आजादी की शताब्दी से पहले, 'अमृत काल' में प्रवेश कर रहे हैं, तब यह जानकर प्रसन्नता होती है कि युवा पीढ़ी भी गांधीजी के आदर्शों से प्रेरणा ले रही है। जब दुनिया, पहले से अधिक जटिल चुनौतियों का सामना करने जा रही है, तब उनका जीवन, एक प्रकाश-स्तंभ के रूप में हमारा मार्ग-दर्शन कर रहा है और एक कठिन मार्ग पर आगे बढ़ने में हमारी सहायता कर रहा है।

गांधी जी ने पूरी मानवता को उसकी वास्तविक क्षमता दिखाई और यह सिद्ध किया कि करुणा में अपार शक्ति होती है। आइए, हम फिर से, सत्य और अहिंसा के उनके दिखाए मार्ग पर चलने, आपसी सद्भाव को बढ़ावा देने और देश एवं दुनिया की प्रगति के लिए काम करने का संकल्प लें।

****